

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमास्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये अरण्यकाण्डे

॥ सप्तषष्ठितमः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

## ॥ सप्तषष्टितमः सर्गः ॥

श्रीरामलम्बणकर्तृकं जटायुषो दर्शनं श्रीरामस्य तमाल्लिष्य रोदनम्

पूर्रजोहप्युक्तमात्रस्तु लम्बणेन सुभाषितम्।  
सारग्राही महासारं प्रतिजग्राह राघरः ॥ 3.67.1 ॥

स निगृह्य महाबाहूः प्रबृद्धं रोषमात्मनः।  
अरष्टभ्य धनुश्चित्रं रामो लम्बणमब्रवीत् ॥ 3.67.2 ॥

किं करिष्यारहे रत्स क्व वा गच्छार लम्बण।  
केनोपायेन पश्यारः सीतामिह रिचिस्तय ॥ 3.67.3 ॥

तं तथा परितापार्तं लम्बणो वाक्यमब्रवीत्।  
इदमेर जनस्थानं रमन्नेषितुमर्हसि ॥ 3.67.4 ॥

राम्कसैर्बल्लभिः कीर्णं नानाद्रमलतायुतम्।  
सन्तीह गिरिदुर्गाणि निर्दराः कन्दराणि च ॥ 3.67.5 ॥

शुहाश्च रिदिधा घोरानानामृगगणकुलाः।  
आरासाः किन्नराणां च गन्धर्वभरनानि च ॥ 3.67.6 ॥

तानि युक्तो मया सार्धं समन्नेषितुमर्हसि।  
रद्विधा बुद्धिसम्पन्ना महात्मानो नरर्षभाः ॥ 3.67.7 ॥

আপৎসু ন প্রকম্পন্তে বায়ুরৈগৈরিরাচলাঃ।  
ইত্যুক্তস্তদ্ রনং সর্ভং রিচচার সলক্ষ্মণঃ ॥ 3.67.8 ॥

ক্রুদ্ধো রামঃ শরং ঘোরং সন্ধায় ধনুষি ক্ষুরম্।  
ততঃ পর্তকুটাভং মহাভাগং দ্বিজোত্তমম্ ॥ 3.67.9 ॥

দদর্শ পতিতং ভূমৌ ক্ষতজার্দ্রং জটায়ুষম্।  
তং দৃষ্ট্বা গিরিশৃঙ্গাভং রামো লক্ষ্মণমব্রবীৎ ॥ 3.67.10 ॥

অনেন সীতা রৈদেহী ভক্ষিতা নাত্র সংশযঃ।  
গৃধ্ররূপমিদং ব্যক্তং রক্ষো ভ্রমতি কাননম্ ॥ 3.67.11 ॥

ভক্ষযিৎরা বিশালাক্ষীমাস্তে সীতাং যথাসুখম্।  
এনং রধিষ্যে দীপ্তাগ্রৈঃ শরৈর্ঘোরৈরজিহ্মগৈঃ ॥ 3.67.12 ॥

ইত্যুক্ত্বাভ্যপতদ্ দ্রষ্টুং সন্ধায় ধনুষি ক্ষুরম্।  
ক্রুদ্ধো রামঃ সমুদ্রান্তাং চালযন্নির মেদিনীম্ ॥ 3.67.13 ॥

তং দীনদীনযা রাচা সফেনং রুধিরং রমন্।  
অভ্যভাষত পক্ষী স রামং দশরথাত্মজম্ ॥ 3.67.14 ॥

যামোষধীমিরাযুষ্মন্ন্নেষসি মহারনে।  
সা দেবী মম চ প্রাণা রারণেনোভযং হতম্ ॥ 3.67.15 ॥

ৎরযা রিরহিতা দেবী লক্ষ্মণেন চ রাঘব।  
হ্রিয়মাণা মযা দৃষ্টা রারণেন বলীযসা ॥ 3.67.16 ॥

সীতামভ্যরপনোহহং রারণশ্চ রণে প্রভো।  
রিধ্বংসিতরথচ্ছত্রঃ পতিতো ধরণীতলে ॥ 3.67.17 ॥

এতদস্য ধনুর্ভগ্নমেতে চাস্য শরাস্তথা।  
অযমস্য রণে রাম ভগ্নঃ সাঙগ্রামিকো রথঃ ॥ 3.67.18 ॥

অযং তু সারথিস্তস্য মৎপক্ষনিহতো ভুরি।  
পরিশ্রান্তস্য মে পক্ষৌ ছিত্বা খড্গেন রারণঃ ॥ 3.67.19 ॥

সীতামাদায রৈদেহীমুৎপপাত রিহাযসম্।  
রক্ষসা নিহতং পূর্বাং মাং ন হস্তং ৎরমর্হসি ॥ 3.67.20 ॥

রামস্তস্য তু রিজ্জায সীতাসক্তাং প্রিয়াং কথাম্।  
গৃধ্ররাজং পরিশ্রজ্য পরিত্যজ্য মহদ্ ধনুঃ ॥ 3.67.21 ॥

নিপপাতারশো ভূমৌ রুরোদ সহলক্ষ্মণঃ।  
দ্বিগুণীকৃততাপার্তো রামো ধীরতরোহপি সন্ ॥ 3.67.22 ॥

একমেকাযনে কৃচ্ছে নিঃশ্বরসন্তং মুহর্মুহঃ।  
সমীক্ষ্য দুঃখিতো রামঃ সৌমিত্রিমিদমব্রবীৎ ॥ 3.67.23 ॥

রাজ্যং ভ্রষ্টং রনে রাসঃ সীতা নষ্টা মৃতো দ্বিজঃ।  
ঐদৃশীযং মমালক্ষ্মীর্দহেদপি হি পারকম্ ॥ 3.67.24 ॥

সম্পূর্ণমপি চেদ্য প্রতরেযং মহোদধিম্।  
সোহপি নুনং মমালক্ষ্ম্যা রিশুষ্যেৎ সরিতাং পতিঃ ॥ 3.67.25 ॥

নাস্ত্যভাগ্যতরো লোকে মত্তোহস্মিন্ স চরাচরে।  
যেনেযং মহতী প্রাপ্তা মযা র্যসনরাগুরা ॥ 3.67.26 ॥

অযং পিতুর্ৰযস্যো মে গৃধ্ররাজো মহাবলঃ।  
শেতে রিনিহতো ভূমৌ মম ভাগ্যরিপর্যযাৎ ॥ 3.67.27 ॥

ইত্যেবমুকত্বা বহুশো রাঘরঃ সহলক্ষ্মণঃ।  
জটায়ুষং চ পস্পর্শ পিতৃস্নেহং নিদর্শযন্ ॥ 3.67.28 ॥

নিকৃতপক্ষং রুধিরারসিক্তং  
তং গৃধ্ররাজং পরিগৃহ্য রামঃ।

ক্ল মৈথিলী প্রাণসমা গতেতি  
রিমুচ্য রাচং নিপপাত ভূমৌ ॥ 3.67.29 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীযে আদিকাৰ্যে অরণ্যকাণ্ডে সপ্তষষ্টিতমঃ সর্গঃ ॥